॥श्री हनुमानजी की आरती ॥

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥
जांके बल से गिरिवर कांपे, रोग दोष जांके निकट न झांके॥
अंजनी पुत्र महा बलदायी, संतन के प्रभु सदा सहाई॥
दे वीर रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका-सी कोट समुद्र-सी खाई, जात पवन सुत बार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे, सियाराम जी के काज संवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े धरणी पर, आनि संजीवन प्राण उबारे॥
पैठि पाताल तोरि यमकातर, अहिरावण की भुजा उखारे॥
बाँये भुजा सब असुर संहारे, दाहिने भुजा सब संत उबारे॥
सुर नर मुनिजन आरती उतारे, जय जय जय हनुमानजी उचारे॥
कंचन थाल कपूर की बाती, आरती करत अंजना माई॥
जो हनुमानजी की आरती गावे, बसि बैकुण्ठ अमर पद पावे॥
लंका विध्वंश किये रघुराई, तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई॥